परिशिष्ट I

स्वच्छ विकास एवं जलवायु पर नई एशिया-प्रशांत साझीदारी के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका, कोरिया गणराज्य, जापान, भारत, चीन और ऑस्ट्रेलिया का विजन स्टेटमेंट।

२८ जुलाई २००५

गरीबी अन्मूलन और विकास बेहद जरूरी व महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय लक्ष्य हैं। टिकाऊ विकास के मसले पर विश्व सम्मेलन ने वहन करने योग्य, विश्वसनीय और स्वच्छ ऊर्जा के विस्तार तक पहुंच बनाने की जरूरत को साफ कर दिया है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने जलवायु परिवर्तन और टिकाऊ विकास पर दिल्ली घोषणापत्र में जलवायु परिवर्तन के हर उपाय के मद्देनजर विकास कार्यसूची के महत्व पर अपनी सहमति दे दी है।

हममें से प्रत्येक के पास कई तरह के प्राकृतिक संसाधन, टिकाऊ विकास और ऊर्जा योजनाएं हैं, बल्कि हम पहले से ही साथ-साथ काम कर रहे हैं और साझा लक्ष्यों को हासिल करने के लिए आगे भी काम करेंगे। हम मौजूदा द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय कोशिशों के आधार पर इस संस्था के जरिये अपनी बढ़ती ऊर्जा जरूरतों एवं वायु प्रदूषण, ऊर्जा सुरक्षा और ग्रीन हाउस गैसों की सघनता जैसी चुनौतियों का सामना करने के लिए सहयोग बढ़ाएंगे।

हम अपनी राष्ट्रीय परिस्थितियों के तहत स्वच्छ और अधिक प्रभावकारी तकनीक के विकास, प्रसार एवं हस्तांतरण के उद्देश्य से मिलकर काम करेंगे तथा प्रदूषण में कमी लाने के राष्ट्रीय लक्ष्य, ऊर्जा सुरक्षा एवं जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चिंताओं के समाधान हेतु जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के संरचना सम्मेलन के सिद्धांतों (यूएनएफसीसीसी) के भीतर एक नई साझीदारी के लिए सामूहिक प्रयास करेंगे।

साझीदारी वर्तमान और उभरती हुई, सस्ती, स्वच्छ तकनीकों एवं प्रयोगों के विकास, प्रसार और हस्तांतरण के लायक उचित माहौल बनाने एवं उसे प्रोत्साहित करने के लिए मिलकर काम करेगी, ताकि इन ठोस प्रयासों के व्यावहारिक परिणाम हासिल किए जा सकें। सहयोग के क्षेत्रों में ये क्षेत्र शामिल (लेकिन इन्हीं तकसीमित नहीं) किए जा सकते हैं : ऊर्जा क्षमता, साफ कोयला, समेकित गैसीकरण सह चक्र, तरलीकृत प्राकृतिक गैस, कार्बन ग्रहण एवं भंडारण, मीथेन ग्रहण एवं प्रयोग, असैन्य परमाणु ऊर्जा, भूतापीय, ग्रामीण ऊर्जा व्यवस्था, अत्याधुनिक परिवहन, भवन एवं गृह निर्माण व प्रक्रिया, जैविक ऊर्जा, कृषि एवं वनखंड, पनबिजली,

वायु ऊर्जा, सौर ऊर्जा और नवीनीकरण योग्य अन्य क्षेत्र।

यह साझीदारी दीर्घकाल में रूपांतरित होने वाली ऊर्जा तकनीकों के विकास, विस्तार, प्रसार और हस्तांतरण के लिए भी काम करेगी, जो ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा में महत्वपूर्ण कमी के योग्य आर्थिक विकास को बढ़ावा देगी। मध्य से लंबी अवधि तक के सहयोग में इन क्षेत्रों को शामिल (लेकिन इन्हीं तकसीमित नहीं) किया जा सकता है : हाइड्रोजन, नैनो टेक्नोलॉजी, विकसित जैव प्रौद्योगिकी, अगले चरण के परमाणु विखंडन और विलयन ऊर्जा।

यह साझीदारी सदस्य देशों के टिकाऊ राष्ट्रीय विकास और ऊर्जा योजनाओं के परिवर्धन व क्रियान्वयन के अनुभवों को आपस में बांटेगी तथा साझीदारों की अपनी-अपनी अर्थव्यवस्थाओं में ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा कम करने के लिए अवसर तलाशेगी।

हम एक अबाध्यकारी समझौता करेंगे, जिसमें इस साझा दृष्टिकोण के सभी तत्वों के साथ इसके लागू करने के रास्तों एवं उद्देश्यों का विश्लेषण किया जाएगा। हम उस साझीदारी के लिए एक ढांचा गढ़ेंगे, जिसमें सांस्थानिक और वित्तीय व्यवस्थाओं के साथ-साथ समान हित और विचार वाले दूसरे देशों को शामिल किए जाने के रास्ते होंगे।

यह साझीदारी सामूहिक प्रयासों को मजबूत करने के लिए मानवीय एवं सांस्थानिक क्षमताओं को बढ़ाने में सदस्य देशों की मदद करेगी और इसमें निजी क्षेत्र की भागीदारी के अवसर तलाशेगी। हम साझीदारी की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए उसकी नियमित समीक्षा भी करेंगे।

साझेदारी जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के संरचना सम्मेलन के अनुरूप होगी, और हमारी कोशिशें उसकी सहायता करेंगी। साझीदारी क्योटो संधि की मददगार के रूप में होगी, न कि उसकी स्थानापन्न।